**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 11-06-2023, Accepted: 27-06-2023, Published: 13-07-2023**
**Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 14-17**

# मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'इदन्नमम' में स्त्री सशक्तीकरण का वर्णन

**गीता रानी**
पी.एच.डी, शोधार्थी, बाबा भीम राव आंबेडकर विश्वविद्यालय, बिहार, भारत

**सारांश**
मैत्रेयी पुष्पा हिंदी साहित्य में, नई पीढ़ी की जानी–मानी लेखिका हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास और कहानियां की कथावस्तु में महिला सशक्तिकरण की भावना सर्वोपरि है। महिला सशक्तिकरण में महिलाओं ने अपने स्वतंत्र अस्तित्व, अपने आत्मगौरव, अपने स्वाभिमान की खोज में पुरुषों के स्वामित्व के आगे झुकने से इनकार कर दिया है। महिला सशक्तिकरण, महिलाओं के शोषण के खिलाफ एक मजबूत विद्रोह है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में बदलते परिवेश और उनकी रोशनी में बदलते मानदंडों के माध्यम से, महिलाओं से संबंधित बुनियादी सवालों को उठाकर महिला सशक्तिकरण पर प्रकाश डाला है। हिंदी कथा साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक, मैत्रेयी पुष्पा ने महिला चेतना और महिला सशक्तिकरण को लेकर हिंदी को उच्च कोटि का साहित्य दिया है। मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'इदन्नमम' प्रसिद्ध, खूब पढ़ा गया और बहु–सम्मानित रहा है। यह उपन्यास 1994 में नई दिल्ली से किताबघर प्रकाशन प्रकाशित हुआ, जिसने मैत्रेयी को एक प्रसिद्ध लेखक का दर्जा दिया।

**मूल शब्दः** इदन्नमम, उपन्यास, सशक्तिकरण, धीमा, राजनीति, महिला, मंदा

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में लेखिकाओं के प्रवेश के साथ, महिलाओं की स्थिति और नारी चेतना पर प्रकाश डालते हुए बहुत कुछ लिखा जा रहा है। वे अपने चारों ओर त्रासदी और शोषण से पीड़ित पात्रों के तनाव को आत्मसात करके उन्हें साहित्य में स्थान दे रही हैं। दुनिया भर की महिलायें, चाहे अनपढ़ हो या शिक्षित, अमीर हो या गरीब, उच्च वर्ग से हों या निम्न वर्ग से, ग्रामीण हों या शहरी, हर जगह उनकी आंखों के आंसू बोलते हैं।

महिला लेखकों ने अपने लेखन में महिलाओं की विभिन्न समस्याओं,उनके शोषण को व्यक्त करते हुए, उनमें उत्पन्न होने वाली चेतना को रेखांकित किया है। इन लेखिकाओं ने नारी समाज को मुक्ति की राह सुझाई है। उन्होंने अपने नारी पात्रों के माध्यम से उन्हें नारी मुक्ति के विभिन्न साधनों से परिचित कराया। ऊषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, गीतांजलिश्री आदि विगत दशक की ऐसी लेखिकाएँ हैं, जिनकी रचनाएँ नारी संघर्ष और नारी मुक्ति की पैरवी करती हैं। उन्हें पूरा भरोसा है कि– ''वह समय जरुर आयेगा जब स्त्रियों पर लगी बंदिशें टूटेंगी। देवी और दासी की भूमिका में पिस रही नारी को गरिमापूर्ण समाधान मिलेगा।"1

## मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य

मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य, उनकी समकालीन लेखिकाओं से थोडा भिन्न है। इन लेखिकाओं ने अपने साहित्य में, नारी विमर्श को ध्यान में रखते हुए अपने विचार व्यक्त किए। लेकिन मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। भारतीय समाज में सदियों से उपेक्षित और उत्पीड़ित महिलाओं की स्थिति–परिस्थिति का परिचय देते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने हमारे सामने एक महिला की एक नई छवि को जन्म दिया है। मैत्रेयीजी ने नारी जाति से जुड़े तमाम कदाचार, कुप्रथायें, कानून आदि को अपने लेखन का आधार बनाया है। यही कारण है कि मैत्रेयी पुष्पा अन्य उपन्यासकारों से अलग हैं। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में पारंपरिक विचारधारा के विरुद्ध आधुनिक विचारों को व्यक्त करने वाली महिलाओं की चर्चा है, जो साहित्य जगत में चर्चा का विषय बन गई है। भारतीय ग्रामीण समाज का वर्णन उनकी कहानियों में मिलता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के पात्र, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक और मुखर हैं। "मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास की मुख्य पात्र (महिलाएं) हमेशा विद्रोही नायिकाएं रही हैं, चाहे वो मंदाकिनी, सारंग, शीलो या अल्मा हो या कोई और। ये सशक्त महिलाएं अपने बल पर समाज की दशा और दिशा बदलने की हिम्मत रखती हैं। के लिए स्वयं अपना जीवन बनाने और अपना जीवनसाथी चुनने की शक्ति रखती हैं। यद्यपि उन्हें ये शक्ति मुफ्त में नहीं मिलती। इसके लिए उनकी बेचैनी, उनकी चिंताएँ, उनका संघर्ष, आदि सब मिलकर उन्हें सक्षम बनाते हैं।

'इदन्नमम' विंध्याचल की तीन पीढ़ियों की कहानी है। जिसमे प्रमुख पात्र कुरीतियों का शिकार होकर अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही महिलाएं हैं। उपन्यास की मुख्य चरित्र मंदाकिनी, एक संघर्षरत लड़की के रूप में दिखाई गई है जो महिलाओं के लिए परिवार और समाज द्वारा बनाई गई बेड़ियों को तोड़ती है। लेखिका ने मंदाकिनी के संघर्ष के माध्यम से समाज की कुछ कठोर वास्तविकताओं को प्रकट किया है। मंदा का चरित्र, साहस, महत्वाकांक्षा और एक अद्भुत जुझारू व्यक्तित्व का प्रतीक है। मंदा के संदर्भ में प्रसिद्ध लेखक राजेंद्र यादव कहते हैं– ''महानगरीय मध्यम वर्ग के संघर्ष और अपने पैरों तले जमीन तलाशने की कहानी... महिलाओं के बीच गांव की मंदा एक अजीब, मासूम, बिना शर्त दृढ़ निश्चयी महिला के व्यक्तित्व के साथ उभरती हैं। ... उसकी लड़ाई दोहरी है, एक महिला होने के नाते और दूसरी शोषितों के अधिकारों के लिए।

नारी विमर्श के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान शीर्ष पर है। उनके उपन्यासों में सामाजिक परिस्थितियों और समस्याओं का एक ऐसा धरातल है, जिसमें इन स्थितियों और समस्याओं को अभिव्यक्ति होती है। इस संदर्भ में उनके उपन्यास न केवल समाज का, बल्कि जीवन का भी दर्पण हैं। उनके उपन्यासों की महिला पात्र सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त अपने जीवन, अपने समाज को सुखद बनाने की कोशिश करती हैं। डॉ. निर्मला जैन अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं – "कड़वी सच्चाई यह है कि पुरुष प्रधान समाज में सदियों से महिलाओं का दमन और शोषण किया जाता रहा है। समाज में उनकी भूमिका और उनकी सामाजिक स्थिति पुरुषों द्वारा निर्धारित की गई है। समाज में एक महिला का स्थान पुरुषों द्वारा निर्धारित किया गया है।

पितृसत्तात्मक सामाजिक मानसिकता, इस पूरे प्रश्न को पुरुष बनाम महिला के ढांचे में देखने की मजबूरी पैदा करती है। इसका परिणाम यह होता है कि स्त्री, पुरुषत्व की परिभाषा में अपनी पहचान की तलाश में या तो इसके समर्थन में या इसके विरुद्ध खड़ी होती है। इसीलिए सभी महिला लेखिकाओं ने इस 'लेखकत्व की चिंता' के मानसिक ढांचे में अपने लेखन कार्य को ढाला है।

मैत्रेयी पुष्पा की कथा के नारी चरित्र में सामाजिक चेतना है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों की नारी पात्र सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त होकर अपने जीवन और समाज को सुखी बनाने का प्रयास करती है। उपन्यास 'इदन्नमम' में, मंदा अपने पिता के अस्पताल के सपने को पूरा करने के लिए अथक संघर्ष करती है। लगभग पंद्रह गांवों जैसे गोपालपुरा, खामा, डिकोली, झकनवारा आदि में सूचना दी। पंचायत बुलाकर गांवों की आबादी दर्ज की गई। सभी ग्राम प्रधानों के हस्ताक्षर लेकर अपनी समस्याएं लिखीं। बीमारियों और मृत्यु के लिए भयानक संदर्भ दिए। उस क्षेत्र के एम.एल.ए. राजासाहब से गुहार लगाई। लेकिन राजासाहेब जैसे राजनेता का मन नहीं था कि सोनपुरा में अस्पताल बने। फिर भी मंदा की लड़ाई थमी नहीं। मंदा की हिम्मत देखकर राजासाहेब भी हैरान हैं – "कितनी जहरीली हँसी है लड़की की! यह हैरत की बात है कि लोग गाँव के नेता बनते जा रहे हैं। पुरुष तो पुरुष इस लड़की की हिम्मत बहुत हैं! इतनी कम उम्र में भी कितनी बड़ी ऊँची बातें करती है।" अंत में राजासाहेब को भी उनके सामने झुकना पड़ा और डॉ इंद्रनील और कंपाउंडर को अस्पताल भेज दिया गया।

हमारे समाज में सदियों से नारी चरित्र की उपेक्षा की जाती रही है और समाज तथा स्वयं नारी एक विकृत मानसिकता से बंधे दिखते हैं। सामाजिक विकास के कालखंड में स्त्रियों पर अनेक धार्मिक, नैतिक और सामाजिक वर्जनाएँ भी थोपी गईं। इसी सन्दर्भ में फ्रांसीसी लेखक सिमोन डी बाउमर ने नारी जाति की नियति को इस प्रकार व्यक्त किया है–– "नारी जन्म से स्त्री नहीं होती, वह बड़ी होकर स्त्री बनती है। कोई जैविक, मनोवैज्ञानिक या आर्थिक कारण ही आधुनिक नारी के भाग्य का एकमात्र नियंत्रक नहीं है। यह पूरी सभ्यता ही है, जो इस स्त्री नाम के अजीब जीव को बनाती है।"

मैत्रेयी पुष्पा ने उस छवि को तोड़ा है। उन्होंने अपने महिला चरित्र के द्वारा नारी का एक मजबूत और दृढ चरित्र भी निर्माण किया है। यही कारण है कि मैत्रेयी पुष्पा अन्य महिला उपन्यासकारों से अलग हैं और महिला के लिए एक नया दृष्टिकोण दिखाती हैं। मंदा का लक्ष्य ग्रामीण विकास है। वह अकेले ही ग्रामीण समाज, उत्पीड़ित वर्ग और आदिवासी श्रमिकों के अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं। वह गाँव–गाँव जाकर रामायण का अर्थ समझा कर लोगन को सामूहिक संघर्ष में शामिल करती है। मंदा मजदूरों को उनकी मेहनत की कीमत और महत्व समझाती है। इसके बाद वह अभिलाख सिंह जैसे शक्तिशाली ठेकेदार को चुनौती देती है – "तो आप क्या करेंगे! आप क्या कर सकते हैं? आप और आपका क्रैशर सुरक्षित रहे, बस इसके लिए ठाकुर जू के भजन गाते रहो"। इतना कहकर उसने अपना सिर झटका और रास्ता काटते हुए आगे बढ़ गई।

मंदा को आश्चर्य होता है कि उसके द्वारा समाज कल्याण के लिए संगठित शक्ति का प्रभाव गांवों पर पड़ने लगा है। मंदा का आत्मविश्वास बढ़ा। वह मंदाकिनी के चेहरे को ध्यान से देखती है। मंदाकिनी के गौरवर्ण, परिपक्व चेहरे पर एक असामान्य सा तेज है। मानो सुबह के उलले की रौशनी उसके चेहरे से फूट रही हो! मंदाकिनी ने ऐसे दृढ उत्साह की चाह तो की थी, लेकिन यह कल्पना भी नहीं की थी कि अन्य गांव भी उनके अभियान का इतना समर्थन करेंगे। ग्रामीण महिलाएं इस साहस के साथ सामने आयेंगी और ताकतवर अमीर लोगों से लड़ने के लिए खड़ी होंगी।

मंदा जैसी युवती की कहानी से मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यास में बात साबित करने में सफल रही हैं, कि अब नारी शक्ति जाग्रत हो गई है। अब सामाजिक ढांचे को तोड़कर महिलाएं न सिर्फ अपने अधिकारों की रक्षा करेंगी, बल्कि समाज को एक नई दिशा में आगे ले जाएंगी। मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा के संघर्ष के माध्यम से दर्शाया है कि, आज महिलाओं में अपने अधिकारों के लिए दृढ़ता और आत्मविश्वास जाग गया है। अपने स्वतंत्र अस्तित्व और आज़ादी की आकांक्षा, उसे लगातार संघर्ष करने के लिए प्रेरित कर रही है। वह पुरानी मान्यताओं की लकीरों को वह पार करने लगी है।

'इदन्नमम' की मुख्य नारी पात्र मंदा के स्त्री चरित्र और मैत्रेयी पुष्पा के अन्य उपन्यासों के स्त्री पात्रों में कुछ अंतर देखने को मिलता है। मैत्रेयी जी के अन्य उपन्यासों जैसे– सारंग, अल्मा कबूतरी, शिलो, भुवनमोहिनी आदि की महिला पात्रों ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया है। लेकिन मंदा के संघर्ष का मुख्य लक्ष्य हमेशा समाज–कल्याण रहा है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना वाली महिला पात्रों के रूप में अक्सर ऐसी ग्रामीण महिलाओं का चित्रण किया है, जिनमें लिंग भेद के विरुद्ध तीव्र रोष और संघर्ष की भावना है। अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने के कारण इन स्त्रियों में शोषक वर्ग के विरुद्ध विद्रोह की भावना होती है। मैत्रेयी पुष्पा की कुछ महिला पात्र सक्रिय रूप से और कुछ निष्क्रिय रूप से राजनीतिक गतिविधियों में भी शामिल होती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में यह महसूस किया गया है कि यदि महिलाओं की निर्णय लेने के स्तर तक पहुंच सुलभ बनाई जाए, तो उनकी बहुत सारी समस्याओं को हल करना आसान हो जायेगा। महिलाएं आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के विभिन्न कार्यक्रमों को संचालित करने में अपनी रचनात्मक क्षमता का उपयोग करने में भी सक्षम होंगी। यह विचार भी सामने आया है कि, महिला सशक्तिकरण का अर्थ निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं को शामिल करना भी होता है। चाहे वह घर की चारदीवारी के भीतर लिए गए निर्णय हों या सरकारी स्तर पर। इसलिए राजनीतिक भागीदारी बढ़ाकर महिला सशक्तिकरण के प्रयासों को सार्थक बनाया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा ने महिलाओं को अधिकतम राजनीति से जोड़ने का प्रयास किया है। वह यह भी मानती हैं कि जिन महिलाओं के पास सत्ता है, उन्हें अपने अधिकारों का उपयोग करना चाहिए। कितनी महिलाएं सत्ता में आती हैं, इसके बाद देखने में आता है कि– ''समाज से लेकर राजनीति तक में स्त्री, पुरुष की हाँ में हाँ मिलाती है। वह पुरुष चाहे पति हो, पुत्र हो अथवा प्रेमी। वह एक वकील के रूप में हो या कोई अन्य, वे हमेशा पुरुष पक्ष की ओर झुकी दिखती है। लेकिन स्त्रियों को यह सब नहीं दिखता हैं। वह ऐसी ही मालिक बनना चाहती है जैसा एक आदमी है। वह हमेशा पुरुष की नकल करती है।

मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यासों में उन महिला पात्रों को सामने लाती हैं; जो भ्रष्ट वोट की राजनीति और धोखेबाज राजनेताओं के खिलाफ संघर्ष के लिए अभियान चलाती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास, इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर दस्तक दे रहे भारतीय ग्रामीण परिवेश का आईना है। मैत्रेयी ने गांव की भ्रष्ट राजनीति को नजदीक से देखा है। वह गांव की महिलाओं को उसी राजनीति में उभारती हैं।

उपन्यास 'इदन्नमम' की नारी पात्र मंदाकिनी, राजनीतिक व्यवस्था से लडती है। उसने पांचवीं तक पढ़ाई की है, फिर भी विधायक राजासाहेब को अपनी बातें मानने के लिए मजबूर करती है। ग्रामीण भी मंदा का साथ देते हैं। आखिर में, गंवार समझी जाने

वाली गाँव की मंदा, दर्श की लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपने गाँव को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में न्याय व्यवस्था के खिलाफ लड़ रही महिलाओं का चित्रण किया है। उपन्यास 'इदन्नमम' का कहानी क्षेत्र में सोनपुरा, श्यामली आदि सहित लगभग 15 गांव शामिल हैं। ये सभी गांव बेहद पिछड़े हैं और राजनेताओं की उपेक्षा के शिकार हैं। सोनपुरा गांव की एक लड़की मंदा, सबसे पहले अपने पिता के सपने को पूरा करने की कोशिश करती है। फिर वह पंचायत बुलाकर सभी ग्राम प्रधानों के हस्ताक्षर लेकर, गांव की आबादी सहित उनकी समस्याएं लिखती है। राजासाहब इस क्षेत्र के विधायक हैं। मंदा ने निश्चय करती है कि, "इस बार हम सीधे राजा साहब को अपनी समस्याओं का आवेदन भेजेंगे। प्रधान काका और कायलेवाले महाराज इस प्रार्थनापत्र को खुद अपने हाथों लेकर जायेंगे। राजा साहब यहाँ के विधायक हैं। हमारे प्रतिनिधि हैं। जिम्मेदार हैं। कहो कि भाई और पिता हैं इस क्षेत्र के। निश्चित रूप से कुछ न कुछ सोचेंगे।" इस पर महाराज टीकम सिंह ने मंदा को समझाना शुरू किया कि दृराजकाज के कम की गति प्रशासन के हाथ में है। वे सब कुछ अपने तरीके से करते हैं। हमारा जीवन नौकरशाहों और राजनेताओं के हाथों का खिलौना बन गया है। यहां कोई लोकतंत्र नहीं है, केवल शोषण प्रणाली चलती है।

तब मंदा ने चुनाव में मतदान नहीं करने का फैसला करती है। उसे लगता है, राजनेताओं को सही रास्ते पर लाने का बस यही एक तरीका है। मंदा नेताओं को चुनौती देती है———"तो क्या करें? इस बार हमने फैसला किया है कि हम यह बातों पर नहीं, काम पर वोट देंगे। अगर हमारी समस्या दूर नहीं करना, तो अपने खाली डिब्बे उठा ले जाओ। एक भी वोट नहीं डाला जाएगा।" अंत में की राजा साहब को उसके सामने झुकना पड़ा और मंदा का लक्ष्य पूरा हुआ।

मैत्रेयी पुष्पा के कार्यों में महिला भले ही किसी गांव की हो, लेकिन वह स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीना चाहती है। आज आधुनिक नारी एक नई संकल्प–शक्ति के साथ जीने लगी है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है।

मंदा की दूसरी लड़ाई गांव में एक स्कूल की स्थापना को लेकर है। मंदा देख रही है कि, कई गांवो में स्कूल होने के बाद भी दूसरे स्कूल खोले जा रहे हैं। परन्तु जहां स्कूल नहीं है, वहां जरूरत होने पर भी कोई बात नहीं करता। मंदा कहती हैं– "हम अब भी बेसुध हैं। अगर वे बेईमानी से बाज नहीं आते तो हम ईमानदारी से क्यों जाएं। ये कितनी चालाकी चलते हैं हमारे साथ। अपनी आँखों देखकर आए है हम। मबूसा गए थे, रिश्तेदारी है हमारी। वहाँ एक स्कूल होते हुए भी, उसके बराबर में दूसरा बन गया। हमने पूछा, भइया, तुम्हारे गाँव में यह दूसरा स्कूल ? बोला, पहला खारिज कर दिया ओवरसियर और प्रधानजी ने। अब मिलीभगत से ही तो ऐसा अन्धेर हो रहा है। कहनेवालों ने भी हमें बता दिया कि पन्द्रह प्रतिशत कमीसन लिया है ओवरसियर ने। कुछ ऊपर भी पहुँचाया होगा, ऊपरवालों ने और ऊपर। और एम.एल.ए. जी के लिए सत प्रतिसत वोट।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने लेखों में यह समाचार दिया है कि भ्रष्टाचार, घूसखोरी, आलस्य, अवसरवादिता, स्वार्थ आदि के कारण सरकारी व्यवस्था जर्जर हो गई है।

राजनीति से ही समाज का कल्याण संभव है। राजनीतिक चेतना का अर्थ है, "वह चेतना, जो मनुष्य में अपने अधिकारों, अधिकारों और कर्तव्यों को निर्धारित करती है। राजनीतिक चेतना के माध्यम से ही मनुष्य, समाज, राज्य, राष्ट्र और यहां तक कि दुनिया में अपने वांछित स्थान का प्रतिनिधित्व करता है। चेतना राजनीति को संयमित, अनुशासित और कल्याणकारी बनाती है।"

महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना होगा। चाहे वह घर की चारदीवारी में लिए गए निर्णय हों, या प्रशासन के स्तर पर। इसलिए, राजनीतिक भागीदारी बढ़ाकर, महिला सशक्तिकरण के प्रयासों को सार्थक बनाया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में यह महसूस किया गया है कि, महिलाओं को निर्णय लेने के स्तर तक पहुंचाकर ही उनकी समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चक' में सारंग और 'अल्मा कबूतरी' में अल्मा ने, चुनावों में भाग लिया है। लेकिन 'इदन्नमम' में कहानी कुछ अलग है। यहां महिला पात्रों ने भ्रष्ट राजनेताओं के खिलाफ खड़े होकर, पुरुष शक्ति की राजनीतिक साजिश को उजागर किया है।

'इदन्नमम' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीति का एक ऐसा चेहरा सामने रखा है; जो आदिवासी, मजदूर जैसे पिछड़े लोगों को वोट बैंक के अलावा कुछ नहीं मानता। वर्षों से चली आ रही व्यवस्था को बदलने की कोशिश बहुत धीमी है। मैत्रेयी ने अपने उपन्यासों में वोट की राजनीति करने वाले राजनेताओं और उनके गिरोह का पर्दाफाश किया है। आज, गाँव का विकास न होने पर मतदाता, जनप्रतिनिधि से सवाल पूछने लगे हैं। वे निष्क्रिय उम्मीदवार को वोट देने से भी इंकार करने लगे हैं। इस उपन्यास के राजासाहेब भी उसी स्थिति में हैं। वह रात के बाद निर्वाचन क्षेत्र का दौरा करते हैं, कायले वाले महाराज से मिलने के लिए सोनपुरा आते हैं। सोनपुरा के लोग उनकी निष्क्रियता की आलोचना करते हैं और आगामी चुनाव में मतदान का बहिष्कार करते हैं।

मंदा ने लोकशक्ति को जगाया है और वह राजनीति के वोट बैंक को बंद करना चाहती है। इसके लिए वह सोनपुरा के आसपास के गांवों में यात्रा करती है। उसके दौर ने रफ्तार पकड़ती। नरसिंहगढ़, खामा, डिकौली के अलावा पहाडियों पर क्रेसर में काम करनेवाले लोगों के पास उसे जाना पड़ता है। उम्मीदवारों के कार्यकर्ता दो–चार दिनों तक लगातार सौ–पचास रुपये या आधा बोतल शराब पीकर उन्हें ले जाएंगे। इसकारण वह गोपालपुरा की ठकुराइन को लेकर सब गांवों पहाड़ियों में घूमती थीं। उसने लोगों को समझाया कि, 'आपको वोट नहीं देना है, आपको किसी भी तरह से लालच में भी नहीं आना है'।

मंदा जनता को जगाती है और चुनावों पर राजनेताओं का बहिष्कार करके अपना संघर्ष शुरू करती है। वह गांव के लोगों को वोटों की दलाली से सावधान रहने को समझाती हैं। मंदा ने गांवों में सलाह करके, गोपालपुरा में वोट की राजनीति को लेकर बैठक बुलाकर आम जनता को आगाह किया। "सुख–दुःख, लाभ–हानि हमें नहीं होते हैं। हम उनके उपयोग की वस्तुएं हैं, जिनसे वे जब चाहें काम लें और जब चाहे फेंक दें। हमारे चेहरे में बेचारगी दिखती तो जब चाहो तो भीख मांग सकते हो, जब चाहो दुत्कार मिलेगी। वे गुड़ डालेंगे, हम चींटों की तरह इकट्ठा हो जायेंगे।"

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने चिंतनशील लेखन के माध्यम से, पुरुष शक्ति की राजनीतिक साजिश को उजागर किया है। उनके कथानक की पात्र ग्रामीण महिलाएं, क्षेत्रीय भूमि पर संगठित होकर नारी शक्ति के रूप में विकसित होती हैं और अंत में राजनीतिक जीवन में प्रवेश करती दिखाई देती हैं। अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागरूक महिला, राजनीति में बहुत सफल दिखाई देती है। जीवन के हर क्षेत्र में नारी अपनी पहचान बना रही है।

## निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास की नारी पात्र को, विद्रोह के प्रतीक के रूप में गढ़ा गया है। जहां हार, निराशा और हताशा के बावजूद सपनों और सृजन की अनगिनत संभावनाएं हैं। मंदा के माध्यम से इस दोमुखी समाज को यही संदेश दिया गया है कि जिस प्रकार समाज में पुरुष के प्रत्येक अपराध और पाप को क्षमा योग्य माना

जाता है, उसी प्रकार स्त्री भी अपने छोटे से अपराध को क्षम्य समझती है, आत्मबलिदान योग्य नहीं। खुद और समाज से उसे सभी हर अधिकारों को प्राप्त करने की आवश्यकता है। मैत्रेयी पुष्पा की महिला पात्र मंदा, अपनी व्यक्तिगत लड़ाई के बजाय सामाजिक और सामूहिक संघर्ष करती हैं। उनका महिला चरित्र पुरुष श्रेष्ठता को चुनौती देकर अपने लिए विभिन्न रास्तों की खोज करते हुए, महिला सशक्तिकरण को एक भव्य दृष्टि देता है। मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'इदन्नमम' ग्रामीण परिवेश और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद महिलाओं की महत्वपूर्ण और सम्मानजनक भूमिका को स्थापित करता है। मंदा अपने सारे फैसले खुद लेती है। वह बलात्कार जैसी घटना से नहीं टूटती, बल्कि अपने प्रेम को ठुकराकर दूसरों का भला करने की राह में चलती है।

## संदर्भ सूचि


1. चित्रा मुदगल, 'एक जमीन अपनी', पृःसः 83
2. हंस, सितम्बर 2006, पृ. 89
3. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012), पृःसः भूमिका के उद्धरण से।
4. डॉ0 निर्मला जैन, 'लेख–कथा और नारी संदर्भ', जुलाई, 1994, पृ. 40
5. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी संस्करण (2012)
6. 'द सेकेण्ड सेक्स', सीमोन द बोउवार का हिन्दी रूपांतर, डॉ. प्रभा खेतान द्वारा, हिंद पाकेट बुक्स, दिलसाद गाडेंन्स, संस्करण 1998, पृ. 121
7. पुष्पामैत्रेयी, 'गुनाह–बेगुनाह', राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2012, पृ. 124–125
8. डॉ. सरोज यादव, 'हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में राजनीतिक चेतना', पृ. 30
9. डॉ. क्षितिज धुमाठ्ठ, 'बीसवी सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृतिमूलक अनुशीलन'